

संपादकीय

अच्छाई के भाव से
त्यक्तित्व की आभा

दुनिया में ऐसे लोग बहुत हैं, जो सफल और सार्थक बनाने की भूमिका में खरे नहीं उतरते। लेकिन उनकी आलोचना करते रहने से हमें कुछ फायदा नहीं होगा। हम केवल सिक्के के दूसरे पहलू पर नजर रखकर ही अपना भला कर सकते हैं कि हमारे लिए आखिर बेहतर क्या है? खुद के बारे में सच जानना हो तो जरूरी है कि आप यह महसूस करें कि आप एक बेहतर इंसान हैं। जो लोग खुद को बुद्धिमान मानते हैं, वे आमतौर पर हारे हुए और शर्म से भरे हुए, प्रताड़ित और टूटे हुए होते हैं। तो फिर सवाल उठता है कि अच्छाई आती कहाँ से है? यह एक ऐसा कठिन सवाल है, जिसका सामना धर्म, दर्शनशास्त्र और अब विज्ञान मिलकर करने के बावजूद किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँचे हैं।

व्यक्ति अपनी जिन्दगी को सफल बनाने के लिये समाज से जुड़कर जीता है, इसलिए समाज की आंखों से वह अपने आप को देखता है। साथ ही उसमें यह विवेक बोध भी जागृत रहता है 'मैं जो भी हूँ, जैसा भी हूँ' इसका भी स्वयं जिम्मेदार हूँ। उसके अच्छे-बुरे चरित्र का बिम्ब समाज के दर्पण में तो प्रतिबिम्बित होता ही है, उसका स्वयं का जीवन भी इसकी प्रस्तुति करता है। हम सब सोचते हैं कि यदि अवसर मिलता तो एक बढ़िया और नेक काम करते। लेकिन हमारी बढ़िया या नेक काम करने की इच्छा अथवा ही रहती है क्योंकि अवसर जब हम जिन्दगी के बुरे दौर से गुजरते हैं, तब उससे निकलने और जब अच्छे दौर में होते हैं, तब उस स्थिति को बरकरार रखने में जिन्दगी बिता देते हैं।

जिन्दगी है तो चुनौतियाँ होंगी ही। कुछ चुनौतियों से आप आसानी से पार पा लेते हैं, पर कुछ आपसे खुद को बदलने की मांग करती हैं। जेन मास्टर मैरी जैक्स कहती हैं, 'अपनी उलझनों का सामना करते हुए अनजान चीजों को गले लगाना हमें विकास की ओर ले जाता है। हमें आगे बढ़ाना है।'

हमारे संकल्प और हमारे आदर्श सांसारिक जीवन के बंधनों में बंधे रहने के बजाय उच्च लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए बढ़ना चाहते हैं, लेकिन मन की इच्छाएँ इसके विपरीत होती हैं। इन दोनों में लगातार संघर्ष चलता रहता है। इस संघर्ष में जीत अवसर मन की इच्छाओं की ही होती है। इसका कारण यह है कि इच्छाओं की मांगें पूरी करने में मनुष्य को तुरंत सुख और आनंद मिलता है। इसके विपरीत आदर्श को जीने या आदर्श की अपेक्षाओं को पूरा करने में मनुष्य को शुरुआती दौर में अपने सुख और आनंद का बलिदान करना होता है। इसलिए लोग सामान्यतया ऐसा करने से बचते हैं। अगर यही स्थिति लंबे समय तक बनी रहे और आदर्श की अपेक्षाओं को दबाया जाता रहे, तो धीरे-धीरे आदर्श की उड़ान समाप्त होने लगती है।

आज लगभग देश और दुनिया इसी आदर्शहीनता के स्थिति से ही मुखातिब है। इसीलिये खूबसूरत जिन्दगी के रहस्य को उद्घाटित करते हुए बारबरा किंगोल्डर ने कहा है कि जिन बदलावों से हम सबसे ज्यादा डरते हैं, हो सकता है उन्हें हमारी मुक्ति का रास्ता छुपा हो। इसका सीधा-साथ तो यही हुआ कि आज ज्यों-ज्यों विकास के नये कीर्तिमान स्थापित हो रहे हैं, त्यों-त्यों आदर्श धूल-धूसरित हो रहे हैं। बावजूद इसके हर दौर में अच्छे, ईमानदार और आदर्शवादी व्यक्ति मौजूद होते हैं। अपने जीवन में जब भी हम ऐसे गुणों का निर्वाह करते हैं, तो इससे न केवल हमारे चेहरे पर संतुष्टि का भाव झलकने लगता है, बल्कि हमारे व्यक्ति त्व में भी उसकी गरिमा दिखाई पड़ती है।

प्रश्न उठता है कि अच्छाई, ईमानदारी और आदर्श आदि उदात्त गुणों के निर्वाह से हमारे चेहरे पर सकारात्मक भाव क्यों और कैसे प्रकट हो जाते हैं? अपने बीते हुए दिनों और घटनाओं पर जरा नजर डालिए। आपने भी अपने जीवन में कई बार इन अच्छाइयों का परिचय दिया होगा। उस समय आपकी मनोदशा कैसी थी और उस मनोदशा का आपके स्वास्थ्य और विचारों पर क्या प्रभाव पड़ा था? विधित ही आपका उत्तर सकारात्मक होगा।

जब भी हम ईमानदारी से अपने कर्तव्य का पालन करते हैं, किसी की मदद करते हैं अथवा कोई अच्छा कार्य करते हैं, तो उससे अपने भीतर हम अपार संतोष महसूस करते हैं। तब वही भाव हमारे चेहरे और विचारों पर भी झलकने लगता है। आजकल जब कुछ चाहिए दौड़कर भगवान के आगे हाथ फैलाकर मांग लिया। भगवान उन्हें को देता है जो एकदम और पवित्रता के साथ अपना काम करते हैं।

हमें अपना हर काम इस तरह करना चाहिए, जैसे हम सौ साल तक जीयेंगे, पर ईश्वर से रोजाना प्रार्थना ऐसे करनी चाहिए, जैसे कल हमारी जिन्दगी का आखिरी दिन हो। वैसे भी अमीर वह नहीं है, जिसके पास सबसे ज्यादा धन-दौलत है, बल्कि वह है, जिसे और कुछ नहीं चाहिए। स्वयं से स्वयं के साक्षात्कार के बिना हमारी लक्ष्य की तलाश और तैयारी दोनों अथुरी रह जाती है। जीने की हर दिशा में हम औरों के मोहताज बनते हैं, औरों का हाथ धामते हैं, उनके पदचिन्ह खोजते हैं।

राजनीति का उद्देश्य

संसार में कहीं भी और कभी भी राजनीति को स्थायी रूप से विनम्रता और शालीनता से जोड़कर नहीं देखा गया। सत्तापक्ष में और विपक्ष में भी यह गुण कभी-कभी किसी मकसद से देखा जाता है, फिर वह ऐसे विलुप्त हो जाता है, जैसे सूरज उग जाने के बाद तारे। लेकिन राजनीति के इस व्यावहारिक पक्ष से अच्छी तरह परिचित लोग भी ऐसा मानते हैं कि अभी की भारतीय राजनीति में कटुता का स्तर पिछले पचास-साठ वर्षों में बने इसके सामान्य मानकों से कहीं ज्यादा है। दोनों पक्षों के अपने-अपने तर्क हैं और कोई भी अपने को असभ्य, कुतर्की या अशालीन मानने को हरगिज तैयार नहीं होगा। स्पष्ट है कि इन राजनेताओं को अपना लहजा बदलने के लिए कोई समझा भी नहीं सकता।

अतीत पर नजर डालें तो इस संदर्भ में महर्षि पतंजलि की एक सूक्ति ध्यान में आती है- 'जब आप किसी महान उद्देश्य या किसी असाधारण परियोजना से अनुप्राणित होते हैं तो आपके विचार अपने बंधन तोड़ देते हैं। मन सीमाओं के पार चला जाता है, चेतना हर दिशा में फैल जाती है और आप स्वयं को एक नए, विराट, आश्चर्यजनक संसार में पाते हैं। सुषुप्त शक्तियाँ, क्षमताएँ और मेधाएँ जाग्रत हो उठती हैं और आप पाते हैं कि आपका कद इतना बड़ा है, जिसका आपने कभी सपना भी नहीं देखा था।' जो लोग अभी भारत की सत्ता संभाल रहे हैं, या कभी इसको संभालने की उम्मीद बांधे हुए हैं, उन्हें सोचना चाहिए कि क्या वे इस देश को लेकर किसी महान उद्देश्य, किसी असाधारण योजना से अनुप्राणित हैं?

जैसी अभूतपूर्व कटुता अभी सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच देखी जा रही है, उससे ऐसा लगता है कि इस सवाल का जवाब 'हां' नहीं है। बहरहाल, लोकतांत्रिक व्यवस्था की यह विशेषता है कि इसमें हर दल को अपने दस्तावेजों में अपने लक्ष्यों-उद्देश्यों की घोषणा करनी होती है। राजनेताओं को यदि समय मिले तो उन्हें चुनावी घोषणापत्रों में ही सिर खपाने के बजाय अपने पार्टी दस्तावेज भी अच्छी तरह पढ़ने चाहिए। अगर वे यह याद रखें कि अपनी युवावस्था में किन आदर्शों से प्रेरित होकर उन्होंने यह रास्ता पकड़ा था, तो विरोधियों में भी उन्हें सहयोगी दिखने लगेंगे।

अब कहाँ 'गंगा इमली'

पुराने दिनों की कई चीजों को आज भी देखने का मन होता है। खानपान की चीजें हों तो उसे खाने का मन करता है। लेकिन कुछ चीजें होती हैं, जिनके बारे में लगता है अरे अब कहाँ मिलेगी। ऐसा ही एक वाक्या पिछले दिनों हुआ। कुछ दिन पूर्व फेसबुक पर बागवानी की शौकतीन एक महिला ने एक चित्र डाला था और उस फल के बीज उपलब्ध कराने की पेशकश की थी। फोटो को देख मैं उछल पड़ा क्योंकि एक तो बचपन की डेर सारी यादें इसके साथ जुड़ी थीं और इस फल को दशकों से नहीं देखा था। इस फल को खाने के लिए घर वालों की डांट पड़ती थी अलग से। जब कभी भी याद आई तो दोस्तों को या बच्चों को बताने की कोशिश की थी लेकिन समझा नहीं सका था। लगा अब तो पेड़ तृप्त हो गये होंगे।



की भरी दुपहरी में दोस्तों के साथ गुलेल, डंडे आदि से लैस होकर शहर के बाहरी तरफ जाया करते थे जहाँ काफी पेड़ थे। पेड़ बहुत बड़े थे और कंटीले भी। गुलेल से या पत्थरों से तोड़ते और जेब भर लेते। कई बार जेब से गंगा इमलियों की बरामदगी मेरी जम कर धुनाई का कारण बनी। आज फिर फोटो में गंगा इमली देखकर मन प्रसन्न हो गया। अब पता चला कि यह फल

मूलतः मेक्सिको का है। इस फल में प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, कैल्शियम, फास्फोरस, लौह, थायामिन, रिबोफ्लेविन आदि तत्व भरपूर मात्र में पाए जाते हैं। पेड़ की छल भी बहुत फायदेमंद होती है। यानी हम इसे चोरी-छिपे भी खाते थे तो फायदा तो होता होगा ही। वास्तव में आज तो कम ही लोग होंगे, जिन्होंने इस जलेबी को देखा होगा। वैसे गांवों में तो अब भी इसे खाया जाता होगा। यदि आपके गांव या शहर में हो तो बताएं। असल में खानपान से संबंधित हो या अन्य किसी चीज के मामले में पुरानी यादों से सहेजे रखने या फिर उनकी याद को ताजा करने के लिए ऐसे मौके तो आते रहते हैं। क्या आपने खाई है जंगल जलेबी या फिर गंगा इमली। या इसका जिक्र भी कहीं सुना हो।

विराट कोहली और मीराबाई चानू को राष्ट्रपति ने खेल रत्न पुरस्कार से किया सम्मानित

नई दिल्ली (आरएनएस)। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने मंगलवार को राष्ट्रपति भवन में खेलों में विशेष योगदान देने वाले खिलाड़ियों को देश के सर्वोच्च खेल सम्मान-राजीव गांधी खेल रत्न, अर्जुन पुरस्कार और कोचों को द्रोणाचार्य पुरस्कार से नवाजा। इस समारोह में भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान विराट कोहली और मीराबाई चानू को खेल रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कोहली और चानू को पदक और प्रशस्ति पत्र सहित 7.5 लाख रुपये का पुरस्कार दिया गया।



शामिल हैं। इसके अलावा, राष्ट्रपति कोविंद ने भारतीय हॉकी खिलाड़ी मनप्रीत सिंह, सविता पुनिया, धावक जिनसन जॉनसन, मालाफेक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा, टेबल टेनिस खिलाड़ी मनिका बत्रा के नाम

साथिया, मनिका बत्रा, टेनिस स्टार रोहन बोपन्ना, पहलवान सुमित और वुशु खिलाड़ी पूजा कादवान को भी अर्जुन पुरस्कार से नवाजा। पैरा ऐथलीट अंकुर धामा और पैरा-बैडमिंटन खिलाड़ी मनोज सरकार को भी अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कोविंद द्वारा द्रोणाचार्य पुरस्कार पाने वालों में मुकेशजी कोच चेन्नई एचिया कुटुम्बा, विजय शर्मा, ए.श्रीनिवास राव (टेटे) और सुखदेव सिंह (एथलेटिक्स), विजय शर्मा (भारतोलक), वी.आर. ब्रीडू (एथलेटिक्स), तारक सिन्हा (क्रिकेट), क्लॉरेस लोबो (हॉकी), जीवन कुमार शर्मा (जूडो) रहे। इस समारोह में राष्ट्रपति ने सत्यदेव प्रसाद (तीरंदाजी), पूर्व भारतीय कप्तान भारत कुमार छेत्री (हॉकी), बाँबी एल्योसियस (एथलेटिक्स), पूर्व पहलवान चांगले

दातु दत्तात्रे, को ध्यानचंद पुरस्कार से सम्मानित किया। इसके अलावा, भारतीय पर्वतारोही डॉ. अंशु जमसेनपा को तेनजिंग नॉर्गे नेशनल एडवेंचर पुरस्कार से नवाजा गया। बता दें हर साल मेजर ध्यानचंद की जयंती (29 अगस्त) के अवसर पर आयोजित होने वाली यह संरेमनी इस बार 25 सितंबर के लिए टाल दी गई थी, क्योंकि इस बार मेजर ध्यानचंद की जयंती के मौके के दौरान इंडोनेशिया में 18वें एशियन गेम्स का आयोजन चल रहा था। ऐसे में ज्यादातर खिलाड़ी यहाँ व्यस्त थे। कोहली खेल का सर्वोच्च सम्मान पाने वाले देश के तीसरे क्रिकेटर हैं, उनसे पहले दुनिया के दिग्गज बल्लेबाज सचिन तेंडुलकर (1997-98) और पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी को (2007) में मिला था।

आईडीबीआई फेडरल मुंबई मैराथन में महिला पेंसर्स का होगा दबदबा

मुंबई (आरएनएस)। इस साल होने वाली आईडीबीआई फेडरल लाइफ इश्योरेंस मुंबई मैराथन में महिला पेंसर्स का बोलबाला है। मुंबई में 30 सितंबर को होने वाली इस मैराथन के लिए 13 पेंसर्स का चयन हुआ है, जिसमें 10 महिलाएँ हैं। इस मैराथन के इतिहास में यह पहला मौका है, जब पुरुष पेंसर्स की तुलना में महिला पेंसर्स की संख्या अधिक है। ये महिला पेंसर्स धावकों को निर्धारित समय पर रस पूरा करने के लिए प्रेरित करेंगी।

फीफा के सर्वश्रेष्ठ पुरुष खिलाड़ी चुने गए मोड्रिक

लंदन (आरएनएस)। क्रोएशिया लिए अपने पूर्व साथी खिलाड़ी के फुटबाल खिलाड़ी लुका मोड्रिक को फीफा के सर्वश्रेष्ठ पुरुष खिलाड़ी के पुरस्कार से नवाजा गया। बीबीसी की रिपोर्ट के अनुसार, लंदन में सोमवार रात को फीफा पुरस्कार समारोह का आयोजन हुआ। रियल मैड्रिड के 33 वर्षीय फाइलन में पहुंची मिडफील्डर मोड्रिक ने इस पुरस्कार के

फारवर्ड मार्था ने फीफा की सर्वश्रेष्ठ महिला फुटबाल खिलाड़ी का पुरस्कार हासिल किया। फ्रांस के कोच दिदीएर देसचाम्प्स को सर्वश्रेष्ठ कोच के पुरस्कार से नवाजा गया। उनकी टीम ने इस साल फीफा विश्व कप का खिताब हासिल किया। बेहतरीन गोल के लिए सलाह को पुरस्कार से नवाजा गया। उन्होंने प्रीमियर लीग में एवर्टन के खिलाफ यह गोल किया था।

वेस्टइंडीज के कोच पद से स्टुअर्ट लॉ का इस्तीफा

एंटीगा (आरएनएस)। आस्ट्रेलिया के पूर्व क्रिकेट खिलाड़ी स्टुअर्ट लॉ ने वेस्टइंडीज क्रिकेट टीम के मुख्य कोच पद से इस्तीफा दे दिया है। जानकारी के अनुसार, भारत और बांग्लादेश के दौर के बाद वेस्टइंडीज के कोच पद को छोड़ देंगे। स्टुअर्ट वेस्टइंडीज के कोच पद को छोड़ने के बाद इंग्लैंड में मिडलसेक्स काउंटी क्लब में कोच पद का कार्यभार संभालेंगे। उनका कहना है कि इससे वह अपने परिवार के करीब रहेंगे। एक बयान में स्टुअर्ट ने कहा,

वेस्टइंडीज के कोच पद से स्टुअर्ट लॉ का इस्तीफा

वेस्टइंडीज के कोच पद को छोड़ने का मुश्किल फैसला मुझे करना पड़ा। इस टीम के साथ खिताया गया सम आनंदमय था। मेरा मानना है कि पिछले दो वर्षों में एक टीम के तौर पर हमने काफी अच्छा विकास किया है। उन्होंने कहा, मैं मिडलसेक्स काउंटी क्लब के कोच का कार्यभार संभाल लूंगा, जिससे मैं अपने परिवार के करीब भी रह सकूंगा। मैं आशा करता हूँ कि वेस्टइंडीज क्रिकेट टीम और स्ट्रफ भविष्य में सफलता हासिल करें।

प्रख्यात खेल कमेंटेटर जसदेव सिंह का निधन

नई दिल्ली (आरएनएस)। लोकप्रिय भारतीय खेल कमेंटेटर जसदेव सिंह का मंगलवार को राजधानी दिल्ली में लंबी बीमार के बाद निधन हो गया। पद्मश्री और पद्म भूषण से सम्मानित जसदेव 87 साल के थे। विश्व भर में अपनी आवाज का लोहा मनवाने वाले जसदेव के निधन पर खेल मंत्री राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने ट्वीट के जरिए शोक प्रकट किया। जसदेव स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस पर आधिकारिक रूप से 1963 से सरकार द्वारा संचालित मीडिया दूरदर्शन और ऑल इंडिया रेडियो के लिए कमेंट्री करते आ रहे थे।

खाना/खजाना- मूंग स्प्राउट्स दोसा



कितने लोगों के लिए - 3 सामग्री - दोसा के लिए- अंकुरित मूंग-1 कप, चावल का आटा- 4 टेबलस्पून, नमक-स्वादानुसार स्टेफिंग के लिए- करी पत्ते -2, हल्दी पाउडर-एक चुटकी, हींग-एक चुटकी, आलू/1/4 कप (उबले), गाजर-2 टेबलस्पून (कटुकसा), टमाटर-1/4 कप (बारीक कटा), प्याज-2 टेबलस्पून (बारीक कटा), ताजा नारियल-1 टेबलस्पून (कटुकसा), हरा धनिया-1 टेबलस्पून (बारीक कटा), घाट मसाला-1/2 टीस्पून, नमक- स्वादानुसार, ऑयल- 4 टीस्पून, राई-1/4 टीस्पून, चुकंदर- 2 टेबलस्पून (कटुकसा) विधि - दोसा का बैटर बनाने के लिए एक बाउल में बैटर के सभी इंग्रेडियंट्स डालें और 3/4 कप पानी डालकर स्मूद पेस्ट बना लें और फरमेंट होने के लिए 15 मिनट तक अलग रख दें। स्टेफिंग बनाने के लिए एक नॉन-स्टिक पैन में तेल गरम करें और राई डालें जब राई घटकने लगे तब इसमें करी पत्ते, हल्दी पाउडर, हींग और बाकी के बचे इंग्रेडियंट्स डालकर अच्छी तरह से मिव्स करें और मीडियम आंच पर एक से दो मिनट तक पका लें और अलग रख दें। मीडियम आंच पर बनाएँ दोसा अब नॉन-स्टिक तवा गरम करें और उसपर 1/4 टीस्पून तेल डालकर चारों तरफ अच्छे से फैला दें। अब तवे पर घममघ से बैटर डालें और गोत शैप में अच्छी तरह फैला दें। फिर किनारों पर 1/2 टीस्पून तेल डालें और मीडियम आंच पर दोसे को सुनहरा होने तक पका लें। अब इसमें स्टेफिंग मिक्सचर अच्छी तरह फैलाकर, दोसे को मोड़ दें। इसी तरह बाकी के दोसे भी बना लें। और नारियल की चटनी के साथ सर्व करें।

शब्द सामर्थ्य

बाएँ से दाएँ 1. राजद प्रमुख 6. रखवाला, 21. विक्रय करना 22. वाणी, कथन, वादा 24. ताश में दस अंकों वाला पत्ता 25. नगर का, नागरिक, चतुर। ऊपर से नीचे 1. बेफ़िक्र, निश्चित, जिसे कोई परवाह न हो 2. मूर्ति 3. दोस्त, प्रेमी 4. कुशल, विशेषज्ञ 5. नदिया, नद। 2. बकबक 18. नारी, स्त्री, महिला बगुला 8. झुका हुआ, झुकाया गया, नत 9. इधर-उधर, पास पड़ोस 11. किस्मत, तकदीर, भाग्य 14. बंदर, मकंद, कपि 16. शक्तिशाली, बलवान 18. संतान, संतति 19. अस्तबल, चुड़चुड़ा 20. राजी करना, रुठे हुए को प्रसन्न करना 23. सरिता, नदिया, नद।

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 39 का हल

मा	म	ला	सि	वा	य	कि
लि	चा	ह	त	म	म	ता
क	सू	र	म	ग	न	ब
र	र	र	द	द	द	द
क	मा	न	पा	र	स	स
मी	म	जा	ल	न	क	ली
ना	दा	न	ना	र	द	का
मि	स्मि	त	तीं			
सु	नी	ल	अ	धी	र	जी

सू-दोक्

7			1		3
1	9		5		
		3			
	5				3
3			2		5
	4				7
7	8		1		6
	6		7		9
					1

नियम 1. कुल 81 बॉर्न हैं, जिनमें 9वर्गों का एक खंड बनता है। 2. हर खाली वर्ग में 1 से 9 के बीच का कोई एक अंक रखा सकते हैं। 3. बाएँ से दाएँ और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कालम, कतार और खंड में 1 से 9 अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते हैं।

सू-दोक् क्र.39 का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6

आज का राशिफल

मेघ: आज आप पर लक्ष्मी की कृपाएँ हैं, ऐसा गणेशजी कहते हैं। जीवसाथी मिलने का योग है। सामाजिक रूप से आपको सह-कीर्ति मिलेगी। व्यापार में लाभ होगा। पुरुष: आज आप किसी भी प्रकार के मानसिक भार से मुक्त हो जाएंगे। शारीरिक रूप से भी आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। परिवारिक जीवन में भी सुख-संतोष का आपको अनुभव होगा। मिथुन: आपका आजका दिन मिश्रित फलदायी रहेगा। स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव आ सकता है। व्यावसायिक स्थल पर भी उभरी अधिकताएँ प्रसन्न रहेंगे। धन का व्यय न हो, ध्यान रखें। कर्क: आज के दिन मन को शांत और प्रफुल्लित रखने के लिए ईश्वर का नाम-स्मरण करें। क्रोध और वाणी पर संयम रखें, अन्यथा कल्लि हो सकती है। सिंह: आज आपको मनोरंजन के भरपूर सवाब उपलब्ध। जितने आप मित्रों और सेहियों के साथ आनंद लूँगे, मध्यम के बाद अधिक विचारों के कारण मानसिक रूप से आप थक सकते हैं। कन्या: आज का दिन आपके लिए गणेशजी खुश बताते हैं। कार्य-सक्रियता मिलने से आप आज आनंदित रहेंगे। आपके मान-सम्मान में वृद्धि होगी। परिवार का वातावरण भी अनुकूल रहेगा। तुला: लेखनकार्य और नृजनात्मक प्रयत्नों के लिए आज का दिन शुभ है। बौद्धिक चर्चा में भाग लेने से आपको सफलता मिलेगी। यह और कीर्ति में वृद्धि होगी। वृश्चिक: आज जिद्दीपन छोड़ देने के लिए गणेशजी आपको सूचित करते हैं। भायुक्तता पर संयम रखने से मानसिक व्यथा का अनुभव कम होगा। विनीत मामलों का आयोजन होगा। धनु: आज भायुवृद्धि का योग है। दिन के समय में आज आपका मन प्रफुल्लित रहेगा। परिजनों के साथ परिवारिक प्रश्नों की चर्चा का आयोजन होगा। मकर: आज धार्मिक विचारों के साथ-साथ धार्मिक कार्यों में खर्च भी हो सकता है। अधिक वाद-विवाद से परिचार का वातावरण कलुषित न हो, इसका ध्यान रखें। कुंभ: आज आपका मन प्रफुल्लित रहेगा। गहन चिंतन शक्ति और आध्यात्मिकता दोनों में आपका मन शुभ रहेगा। नकारात्मक विचारों को मन से निकाल दें। वाणी पर संयम रखें। धन व्यय न हो, इसका ध्यान रखें। मीन: किसी के विवाद में न पड़ने की गणेशजी सलाह देते हैं। मन एकत्र करने का प्रयास करें। आज खर्च पर संयम रखें। स्वप्नों के साथ मनबुद्ध होने के प्रसंग बन सकते हैं। मध्यम के बाद आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा। मानसिक रूप से भी आपको स्वास्थ्य का अनुभव करेगा।